5. व्यक्तिगत विकास का उद्देश्य :- समावेशी विद्यालयों में व्यक्तिगत रूप से छात्रों की रुचि एवं योग्यता का ज्ञान प्राप्त करते हुए उनका विकास किया जाता है। समावेशी विद्यालय की प्रक्रिया के अन्तर्गत एक ओर प्रतिभाशाली बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है तो दूसरी ओर मन्द बुद्धि बालक के विकास की प्रक्रिया को उसके उच्चतम स्तर तक पहुँचाया जाता है।

6. सामाजिक न्याय का उद्देश्य :- समावेशी विद्यालयों के द्वारा प्रत्येक बालक एवं बालिका को विद्यालयी जीवन से ही अधिकार एवं कर्तव्य का बोध करा दिया जाता है। इन विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त बालक-बालिकाओं का कोई भी व्यक्ति शोषण नहीं कर सकता। इनके कार्य एवं व्यवहार से कभी सामाजिक अन्याय उत्पन्न नहीं होता। अतः समावेशी विद्यालय सामाजिक न्याय का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

7. सार्वजनिक हित का उद्देश्य :- समावेशी विद्यालयों के अन्तर्गत किसी वर्ग विशेष के लिये कार्य नहीं किया जाता वरन् सभी प्रकार के छात्रों के हित में कार्य किया जाता है। समावेशी विद्यालयों में प्रवेश बिना किसी भेदभाव के किया जाता है परंतु जब उन छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

16

की पूर्ति की जाती है तो उनकी योग्यता को ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार सार्वजनिक हित का उद्देश्य पूर्ण किया जाता है जिससे समग्रता एवं समरसता उत्पन्न होती है।

8. सहयोगी वातावरण का निर्माण :— सहयोगी वातावरण के निर्माण की प्रक्रिया समावेशी विद्यालयों में छात्रों को सिखायी जाती है। प्रत्येक छात्र एवं छात्रा का सहयोग मूल्यांकन प्रक्रिया के निर्माण, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा विद्यालय के नियम आदि के निर्माण में लिया जाता है। इसी क्रम में, समावेशी विद्यालय के शिक्षक, प्रधानाध्यापक एवं प्रबन्धक सामुदायिक सहयोग प्राप्त करते हैं तथा आपस में भी पूर्ण सहयोग का निर्माण करते हैं।

9. समग्र विकास का उद्देश्य :— शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना होता है। समावेशी विद्यालयों की प्रक्रिया इस प्रकार की होती है कि इसमें छात्रों में विविध प्रकार के सामाजिक कौशल एवं गुणों के विकास के साथ-साथ उनके समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इसमें छात्र अपने सामाजिक, शैक्षिक नैतिक एवं मानवीय दायित्वों को समझते हुए अपनी भूमिका को सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के लिये प्रस्तुत करता है।

❖ Necessity is the mother of invention.

Scanned with CamScanner

10. शैक्षिक वातावरण का निर्माण :— शैक्षिक वातावरण के निर्माण की प्रक्रिया को भी समावेशी विद्यालयों में महत्व दिया जाता है। प्रायः इसमें सिद्धान्त एवं व्यवहार का समन्वित रूप प्रस्तुत किया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराना, छात्रों के लिये रुचिपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उपलब्ध कराना तथा छात्रों की रुचि के अनुरूप पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं उपलब्ध कराना इन विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य होता है। इससे शैक्षिक वातावरण निर्मित होते हैं।

11. शैक्षिक अवसरों की समानता :— समावेशी विद्यालयों के द्वारा छात्रों को शैक्षिक अवसरों की समानता उपलब्ध करायी जाती है इसमें प्रत्येक स्तर के छात्र को प्रवेश दिया जाता है। जो छात्र अन्य विद्यालयों में अपनी अक्षमता एवं गरीबी के कारण प्रवेश नहीं पाते उनका भी इन विद्यालयों में स्वागत होता है। इस प्रकार वास्तविक अर्थों में ये विद्यालय शैक्षिक अवसरों की समानता उपलब्ध कराते हैं जो कि वर्तमान समय की प्रमुख आवश्यकता है।

12. विकास के अवसरों की समानता :— समावेशी विद्यालय की प्रमुख आवश्यकता विकास के अवसरों की उपलब्धता के लिये होती है। इसमें प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है तथा उसकी आवश्यकता के अनुरूप व्यवस्थाएं उपलब्ध

Scanned with CamScanner

18 व्यवस्थाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं। इससे उसका विकास उस उच्चतम सीमा तक होता है। जितना कि वह प्राप्त कर सकता है। ऐसे विद्यालयों की वर्तमान समय में आवश्यकता है जिससे कि सभी को विकास के लिये समान एवं आवश्यक अवसर उपलब्ध हो सकें।

13. विविधता में एकता :— समावेशी विद्यालय विविधता में एकता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इन विद्यालयों में विविध संस्कृतियों, सामाजिक स्तरों एवं मानसिक स्तरों के छात्र प्रवेश पाते हैं। इन विद्यालयों का उद्देश्य व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से छात्र-छात्राओं की शैक्षिक एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है। इस प्रकार ये विद्यालय विविधता में एकता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

14. सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के लिये :— वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये अनैतिक कार्य करने में भी संकोच नहीं करता इस विद्यालय की सभी योजनाएँ एवं सभी छात्र, शिक्षक एवं प्रबंधक सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के लिये कार्य करते हैं। इसके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आता है उसमें व्यापक दृष्टिकोण एवं सद्भावना विकसित होती है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समय में समावेशी बालकों को मुख्य धारा में लाने

Scanned with CamScanner

के लिये समावेशी विद्यालयों की प्रमुख रूप से आवश्यकता है क्योंकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह विद्यालय महत्वपूर्ण है।

भारतीय शिक्षा आयोग 1964-66 की अनुशंसाएँ :—

भारतीय शिक्षा आयोग या कोठारी कमीशन के सुझाव प्रत्येक शैक्षिक क्षेत्र के लिये महत्वपूर्ण एवं आवश्यक माने जाते हैं। भारतीय शिक्षा आयोग ने समावेशी शिक्षा एवं समावेशी विद्यालयों के सन्दर्भ में भी अनेक सुझाव प्रस्तुत किये हैं, जिनके आधार पर ही समावेशी शिक्षा एवं समावेशी विद्यालयों की अनुशंसा की गयी है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना 2005 के समावेशी शिक्षा एवं समावेशी विद्यालय की ओर संकेत करने वाले सुझावों को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है :—

(i) छात्र केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था।

(ii) लोचपूर्ण शिक्षा व्यवस्था।

(iii) निष्पक्ष शिक्षा व्यवस्था।

(iv) अधिगमकर्ता को स्वतंत्रता।

(v) शिक्षक की भूमिका सुविधादाता के रूप में।

(vi) कक्षा - कक्ष का वातावरण।

Scanned with CamScanner